Electronic Interdisciplinary International Research Journal (EIIRJ)
A Peer Reviewed Interdisciplinary Journal UGC Approved Journal No 48833
Impact Factor 5.20 ISSN 2277-8721

कला शिक्षण की अध्यापन विधियां

AVNEET KAUR

Research Scholar

Maharishi Dayanand University, Rohtak

पिछले कुछ समय से अध्यापन विधियां तथा विषय वस्तु को लेकर काफी विवाद चल रहा है। कुछ दार्शनिक तथा शिक्षा शास्त्रियों ने अपने–अपने मन्त्र व्यक्त किये हैं। कुछ विचारधारकों के अनुसार विषय–वस्तु का ज्ञान होना अनिवार्य है। विषय–वस्तु किसी विषय के शिक्षण का प्रभावशाली तत्व है। परन्तु कुछ विषय शास्त्रियों तथा विचारकों के अनुसार शिक्षण विधियां महत्वपूर्ण है। विषय–वस्तु को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करना किसी विषय रूपी शरीर के अन्दर ज्योति प्रजवलन करना होता है। कला शास्त्र के अन्तर्गत तो इसका महत्व कुछ अधिक बढ़ जाता है। कला का शिक्षण माहिर अध्यापकों के कारणवश अर्थात उसको अंलकृत करने का ढंग केवल उसकी विधियां है।

कला शिक्षण की महत्वता

सैकण्डरी ऐजुकेशन अनुसार, "प्रत्येक अध्यापक तथा शिक्षा शास्त्रियों को इस बात का ज्ञान बताता है कि सबसे अच्छा पाठ्यक्रम तथा सम्पूर्ण सिलेबस फेल हो जाता है, यदि अच्छा अध्यापक अच्छी शिक्षण विधियों को प्रयोग नहीं करता हो"। यहां तक कि असंतुष्ट तथा अकाल्पनिक सिलेबस को भी रोचक तथा महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है अगर प्रतिभाशाली अध्यापक किसी विषय वस्तु में विधियों को प्रयोग करता है। पाठ्यक्रम ध्यान केन्द्रित होना चाहिए, पाठ्यक्रम में विधियां पाठ्यक्रम की शक्ति में बढोतरी करती है। विधियों में व्यक्ति के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास होता है। विभिन्न विभिन्न विधियों द्वारा कला शास्त्र पढ़ाया जा सकता है।

कला शिक्षण की विधियां

1. लैक्चर विधि
2. प्रोजेक्ट विधि
3. निरीक्षण विधि
4. प्रदर्शन विधि
5. काल्पनिक विधि

लैक्चर विधि

लैक्चर विधि सबसे पुरातन विधि है। यह अध्यापक केन्द्रित विधि है। पुराने समय में इस प्रथा के माध्यम से विद्यार्थी अपनी शिक्षा ग्रहण करते रहें। स्कूल कॉलेजों में इस विधि का सबसे अधिक प्रयोग होता चला आ रहा है। आधुनिक युग की आवश्यकताओं तथा उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इसके स्वरूप में परिवर्तन हो गया है। स्कूलों में तो इस विधि का प्रयोग कम हो गया है, परन्तु कॉलेजों में अभी भी यह विधि प्रयोग हो रही है। यह विधि अध्यापक केन्द्रित होने के कारण अध्यापक की सफलता तथा असफलता उसके व्यक्तित्व पर निर्भर करती है। यह विधि लाभदायक भी है, निम्नलिखित हालातों में प्रयोग की जाती है।

1. संकल्पों को स्पष्टता प्रदान करने के लिए

किसी विषय के संकल्पों को सम्पूर्ण तौर पर स्पष्टता प्रदान करती है। विद्यार्थियों का आधार मजबूत करने के लिए अध्यापक को इस विधि के माध्यम से तत्वो तथा अर्थ समझने में सहायक है। अध्यापक लैक्चर विधि से स्पष्टता प्रदान करता है तथा पुस्तकीय ज्ञान की शंकाओं को कम करता है।

2. विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करने के लिए

लैक्चर विधि द्वारा विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करता है। कितनी समस्याएं जो कि आधुनिक युग में विद्यार्थियों के समक्ष आती है, उनका समाधान तथा उनको साकारात्मक दिशा की तरफ प्रेरित करना इसी विधि द्वारा ही संभव है। कलात्मक ढंग से उनमें उत्साह भरने का श्रेय इसी विधि को जाता है।

3. अतिरिक्त विषय वस्तु प्रदान करना

कभी कभी विषय सामग्री कम रह जाती है। परन्तु इस विधि के माध्यम से विषय का विस्तार होने के कारण विद्यार्थी के पास पर्याप्त विषय मिल जाता है, वह महत्वपूर्ण तथ्व अपनी अपनी इच्छा अनुसार निकाल कर विषय वस्तु को अच्छे ढंग से प्रदर्शित कर सकता है।

4. सार देना

स्कूल में इस विधि के बिना भी अन्य विधियां है जिससे इन्हें पढाया जाता है। व्यक्तिगत तथा सामूहिक कार्य यदि यह विधि उचित समय तथा सही ढंग से प्रयोग की जाए तो इसे समय तथा धन की बचत, बुद्धिमान विद्यार्थियों को लाभ, अन्य विषयों के आधार तथा सार और समीक्षा के रूप में लाभदायक सिद्ध हुआ है।

इस विधि के लाभ के साथ साथ कुछ दोष भी है जो निम्नलिखित है।

1. विद्यार्थियों की कम क्रियाएं होती है तथा अध्यापकों की अधिक।

2. लैक्चर की गति तीव्र होन के कारण सभी कुछ समझने में असमर्थ विद्यार्थी
3. प्राइमरी स्तर पर अनुपयोगी।
4. यह विधि व्यक्तिगत विभिन्नता समझने मे असमर्थता तथा रूझान, रूवि, भावना तथा बुद्धिमता का स्तर समझने में भी असमर्थ।
5. अध्यापक पर अधिकतर निर्भरता।
6. अध्यापक पथ भटकने के कारण विषय को अन्य जगह ले जाता है।
7. विद्यार्थी अच्छा व्यक्ति नहीं बन पाता।
8. दलील तथा चिन्तन शक्ति का विद्यार्थी में विकास नहीं होता ।
9. विद्यार्थी का आत्म विश्वास नहीं पड़ता।
10. शिक्षा के सम्पूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो पाती।
11. इस विधि द्वारा खुद करके सीखना सिद्धान्त का पालन नही होता।

इतनी कमियों के बावजूद भी सैकण्डरी तथा उच्च स्तर पर यह विधि कामयाब होती है।

लैक्चर विधि को रूचिगत (रौचक) बनाने के लिए सुझाव :–

1. **सहायक सामग्री का प्रयोग** :– सहायक सामग्री का प्रयोग करके इसी विधि में रूचि उत्पन्न होती है। विद्यार्थी उत्साह पूर्वक सुनते है।
2. **रोजाना जीवन सम्बन्धी उदाहरण** :– अध्यापक इस विधि के अन्तर्गत विषय वस्तु पढाते समय हमारे रोजाना जीवन में होने वाली घटनाओं को जोड़ कर या उनके उदाहरण देकर बच्चों को शिक्षित करेगा, तो बच्चों की बोरियत दूर हो जाएगी।
3. **हास्य रस** :– हास्य जीवन का आधार है। हास्य किसी भी विषय में नई जान भर देता है। कला का ज्ञान देते समय यदि अध्यापक थोड़ा हास्य व्यंग्य करे तो विद्यार्थी रूचि लेते हैं।
4. **अच्छी तैयारी :–** लैकचर विधि पढ़ाते समय अध्यापक की विषय पर अच्छी तैयारी होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी उसकी रूचिगत ढंग से जान सके।
5. **मॉको का चुनाव** :– लैकचर के लिए मॉके चुनाव भी आवश्यक है। कब तथा किस विषय पर विद्यार्थियों को कैसे अवगत करवाना है ताकि बच्चे सीखें।
6. **नोटस** :– विद्यार्थियों को किसी विषय को पढ़ाने से पहले उसके नोटस Prepare करके उसे देकर पढ़ाने से बच्चे सीखतें हैं।
7. **मूल स्त्रोत** :– उन्हे मूल स्त्रोतों के बारे में भी बताया जाए ताकि विद्यार्थी सच देकर खुद समझने के लिए प्रेरित हो।

8. **मूल्यांकन** :– बच्चों को पढ़ाने के पश्चात उनका मूल्यांकन भी करना चाहिए ताकि बच्चे विषय में रूचि लें।

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि लैक्चर विधि शिक्षण की महत्वपूर्ण विधि है, यह विधि में कमियां अवश्य है, परन्तु सुझावों को ध्यान में रखते हुए एक अध्यापक मोतियों की माला को क्रमबद्ध संजोते हुए शिक्षा के सम्पूर्ण उद्देश्यों को यदि प्राप्त कर सकता है या यूं कहें कि विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक पक्ष को मजबूत आधार दे सकता है तो सिर्फ इसी विधि के माध्यम से ही यह संभव है। यह विधि हर शंकाओं को दूर करके हुए विद्यार्थी को विषय वस्तु की गहराई से गहन करवाने में सहायक भूमिका निभाती है।

प्रौजेक्ट विधि

प्रौजेक्ट विधि के नाम से स्पष्ट है कि असल साधनों का प्रयोग करते हुए पढ़ाना। यह इस सिद्धान्त पर कार्य करता है कि विद्यार्थियों को जो भी पढ़ाया जाता है उसका असल घटनाओं के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध होना चाहिए। यह विधि रोजाना जीवन से सम्बन्धित होती है।

इस विधि को बनाने वाले किलपैटरिक अनुसार "प्रौजेकट पूर्ण लगन वाली महत्व भरी कार्यशीलता है जो सामाजिक वातावरण में निभाई जाती है।" जैसा कि ताज महल का सही ज्ञान उसे पढ़कर नहीं लिया जा सकता, बल्कि उसे देखकर महसूस करके लिया जा सकता है। यूं कहा जा सकता है कि मूल स्त्रोंतों से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इस विधि को अलग–अलग भागों में नहीं बांटा जाता, सभी विषय एक जैसे समझे जाते हैं। यह निम्नलिखित सिद्धान्तों के साथ सम्बन्धित हैं।

1. समस्या को बच्चों की क्रियाशीलता के साथ जोड़ना।
2. इसमें बच्चा हमेशा सीखने के लिए तैयार रहता है।
3. इसमें बच्चा स्वयं करके सीखता है।
4. बच्चे को सीखने के लिए पूरी (स्वतंत्रता) आजादी मिलती है।
5. इस विधि से बच्चे में आपसी मेलजोल की भावना पैदा होती है।

प्रौजेक्ट की किस्में :–

1. **भौतिक स्त्रोत** :– पुरानी इमारतें, पहाड़ पुराने पहरावें, हथियार, बर्तन तथा सिक्के।
2. **मौखिक स्त्रोत** :– लोकगीत, लोक कथाएं, कहानियां आदि।
3. **लिखित स्त्रोत** :– संजीवनी, डायरी, पुरातन ग्रन्थ, अखबार और रसाले आदि।

विद्यार्थियों के इसके उद्देश्य का ज्ञान नहीं होता, परन्तु अध्यापक को पूर्ण ज्ञान होता है तथा अध्यापक सुविधा अनुसार इनका प्रयोग करता है।

प्रौजेक्ट विधि के लाभ

मनोवैज्ञानिक नियमों पर आधारित :– यह विधि मनोवैज्ञानिक नियमों पर आधारित होती है। क्योंकि इसमें बच्चे की रूचि, संवेगों पर ध्यान होता है।

सच्चाई के नजदीक :– कुछ विषय सिर्फ कहानियां होती है। उनमें सच्चाई महसूस नहीं होती, यह विधि सच्चाई के निकट होती है।

सही दृष्टिकोण :– इस विधि के माध्यम से उचित दृष्टिकोण लागू होता है। उचित दृष्टिकोण के साथ–साथ अच्छे गुणों का विकास भी होता है।

क्रियात्मक विधि :– करके सीखना सिद्धान्त को यह विधि पूरी तरह सफल बनाती है। इसमें विद्यार्थी क्रियात्मक ढंग से सीखते हैं।

चिंतन शक्ति का विकास :– इस विधि के माध्यम से सोचने समझने की शक्ति का विस्तार होता है जब विद्यार्थी असल चीजें देखकर निरीक्षण करते हैं, इससे चिंतनशक्ति में वृद्धि होती है।

अच्छी आदतों का विकास :– इस विधि द्वारा भरोसा, फर्ज, आपसी भाईचारा, सहयोग, सहनशीलता आदि गुणों का विकास होता है।

खोज का आधार :– इस विधि द्वारा खोज विधि का आधार है, विद्यार्थी में रूचि का विकास करके उसे डाटा इकट्ठा करने के लिए प्रेरित करती है।

समस्याएं हल करने में विश्वास :– यह विधि समस्याएं हल करने में विश्वास रखती है। समस्याओं से जूझकर उसे हल करती है।

सीमाएं

1. इस विधि से समय, शक्ति तथा यत्न का खर्च होता है, उतना विद्यार्थी सीख नहीं सकता।
2. उच्च कक्षाओं के लिए यह विधि उपयोगी नहीं।
3. इस विधि से बच्चों में सामाजिक गुण पैदा नहीं होते।
4. इस विधि की पुस्तकें कम है।
5. स्कूल में सभी विषयों के लिए इस विधि द्वारा पढ़ाने की योजना आसान नहीं है।
6. इसको कई बार काफी माह लग जाते हैं, सिलेबस पूरा नहीं हो पाता।
7. मूल स्त्रोतों की कमी भी होती है।

निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है। प्रोजेक्ट विधि मूल स्त्रोतों द्वारा विद्यार्थियों को ज्ञान देती है तथा कुछ स्थितियों में कभी–कभी हम किसी विषय को प्रोजैकट माध्यम से नहीं पढ़ा सकते क्योंकि यह समय, शक्ति और धन को नष्ट भी करती हैं, फिर भी यह विधि बहुत उपयोगी है।

निरीक्षण विधि

निरीक्षण जैसे कि नाम से ही स्पष्ट है, किसी कार्य या विषय वस्तु को निरीक्षण करते हुए काम करना या करवाना। निरीक्षण विधि वह विधि है, जिसमें अध्यापक या किसी माहिर के समक्ष विद्यार्थी अपना विषय वस्तु का ज्ञान अर्जन करते हैं तथा अध्यापक या माहिर उनमें साथ साथ गलतियों का निर्वारण करते हुए सही कार्य करते हैं। यह विधि स्कूलों में अधिकतर प्रयोग की जाती है। इस विधि की बहुत आवश्यकता है।

निरीक्षण विधि की आवश्यकता

1. यह विद्यार्थियों को नये मौके प्रदान करती है।
2. इस विधि में अध्यापक की मौजूदगी अनिवार्य है।
3. यह विद्यार्थियों में काम करने की आदत डालती है।
4. इस विधि में विद्यार्थियों का लगातार मूल्यांकन होता है।
5. आलसी तथा कामचोर विद्यार्थियों की कमियां सुधारने में सहायक है।
6. इससे विद्यार्थियों ने आपसी सहयोग भावना का विकास होता है।
7. जिन बच्चों का घर का माहौल ठीक नहीं, उनके लिए यह सबसे महत्वपूर्ण है।
8. अध्यापक तथा विद्यार्थी का रिश्ता मजबूत करती है।
9. फ्री समय का उचित ढंग से प्रयोग करने में सहायक।
10. बच्चों की गलतियों में साथ–साथ सुधार का मौका मिलता है।
11. ज्ञान को वृद्धि करने में यह विधि सबसे महत्वपूर्ण है।

कमियां

1. इस विधि द्वारा बडे–बड़े ग्रुपों पर ध्यान नहीं दिया जा सकता।
2. इसमे अध्यापक कई बार विद्यार्थियों की अधिक गलतियां निकालते है, जिससे विद्यार्थी में निराशावाद की भावना आ जाती है।
3. इसमें भेदभाव की संभावना पड़ जाती है।
4. कई बार विद्यार्थी अध्यापक पर अधिक निर्भर करते हैं तथा अधिक अगवाई बच्चों को बिगाड़ भी सकती है।

प्रभावशाली कैसे बनाया जाए?

1. यदि काम अधिक हो तो प्रतिभाशाली विद्यार्थियों में काम बांट देना चाहिए ताकि विद्यार्थियों का उचित निरीक्षण हो सके।
2. अध्यापक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को उत्साहित करके उसे निर्भर बनाये।
3. इसके लिए समय बहुत अधिक निश्चित न किया जाए।

4. विद्यार्थियों को विचार रखने की खुल देनी चाहिए।
5. विद्यार्थियों की तरक्की का पूरा रिकॉर्ड रखना चाहिए।
6. कमजोर विद्यार्थियों पर अधिक बल।
7. प्रतियोगिताएं करवाई जाए।
8. विद्यार्थी फजूल कामों में समय खर्च न करें अध्यापक को ध्यान देना चाहिए।
9. कला क्षेत्र में बच्चों को स्वयं निर्मित चीजों की प्रदर्शनी पर अध्यापक को अधिक बल देना चाहिए।

उपर्युक्त निष्कर्ष के पश्चात् यह कहना उचित होगा कि निरीक्षण विधि एक सर्वमान्य विधि है, यह विधि न केवल विद्यार्थी की गलतियों में सुधार लाती है, बल्कि उन्हें समय सिर अग्रसर करने के लिए प्रेरित करती है तथा भविष्य में गलतियों न करने के संकेत का एक जीता जागता रूप है। यह विधि ज्ञानात्मक पक्ष को स्थायी बनाने में सहायक है।

प्रदर्शन विधि

प्रदर्शन विधि कला क्षेत्र की महत्वपूर्ण विधि है। कला सीखने में कला सिखाने वाले का सबसे महत्वूपर्ण योगदान है। कला एक ऐसी विद्या है जिसको देखकर हम नहीं सीख सकते, बल्कि जब अध्यापक विद्यार्थियों के समक्ष स्वयं प्रदर्शित करके सिखाता है तो स्थायी सीखने वाली विद्या का निर्माण होता है।

"Demostration is way to teach any thing giving with demo"

प्रदर्शन एक ऐसा मार्ग है जो किसी विषय को प्रथम बार करके दिखाना होता है।

प्रदर्शन विधि की आवश्यकता

1. विद्यार्थी तीव्रता से सीखते हैं।
2. अध्यापक प्रधान तकनीक है तथा विद्यार्थी अध्यापक को स्वयं करते देखते है तो सीखते हैं।
3. यह विद्यार्थी में ज्ञानात्मक पक्ष का शंका रहित सम्पूर्ण रूप सृजित करती है।
4. यह एक ध्यान केन्द्रित विधि है, विद्यार्थी ध्यानपूर्वक सीखते हैं।
5. यह प्रभावशाली विधि हैं।
6. विद्यार्थी विषय को पूरी गहनता से सीखते हैं।
7. यह एक प्रयोगी विधि के रूप में उभर कर समक्ष आई है।
8. विषय में रूचि उत्पन्न करने में यह विधि प्रभावशाली है।
9. विद्यार्थियों की मौलिक चिंतन शक्ति के विकास में यह विधि अपनी सर्वोत्तम भूमिका निभाती है।

10. स्वयं अध्ययन के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करती है।

सीमाएं :–

यह विधि महत्वपूर्ण तो है परन्तु इसकी कुछ सीमाएं भी है।

1. अध्यापक केन्द्रित होने के कारण विद्यार्थी बोर हो जाते हैं।
2. छात्र की भागीदारी बहुत कम होती है।
3. विद्यार्थी की स्वयं की चिंतन शक्ति को विकास नहीं हो पाता।
4. इस विधि का हर विषय या उपविषय नहीं पढ़ा जा सकता।
5. जिन कक्षाओं में सिलेबस बहुत हो, उसके लिए उपयोगी नहीं।
6. इसमें समय, शक्ति और धन की नष्टता अधिक होती है।
7. विद्यार्थियों द्वारा प्रत्येक पग को ध्यानपूर्वक सीखना पड़ता है।

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि प्रदर्शन विधि महत्वपूर्ण विधि है। यह प्रदर्शन के माध्यम से माहिर द्वारा शरीर में भरी आत्मा रूपी जान तो बन जाती है। परन्तु यदि विद्यार्थी इसका एक भी पग भूल जाए तो कलात्मक ढंग की दिशा की बदल सकती है।

काल्पनिक विधि

काल्पनिक विधि कल्पना पर आधारित है। यह विधि कला के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्व भूमिका अदा करती है। यह विधि विद्यार्थी तथा अध्यापक दोनों में चिंतन शक्ति का विकास करने में सहायक हैं।

साधारण शब्दों में कहें तो यह कहना उचित होगा कि कल्पना करते ही, उसी चीज को, कागज पर बना देना, काल्पनिक विधि है। कल्पना विधि विद्यार्थी तथा अघ्यापक किसी भी कल्पना तथा अभ्यास का मिला जुला स्वरूप है, जो निखर कर कला के रूप में समक्ष आता है। उदाहरण के तौर पर मैनें सोचा कि एक कमीज का डिजाईन ऐसा हो, कमीज का रंग सफेद हो, कॉलर तथा कफ काले हो, केन्द्र में काली पट्टी हो। यह मैंने दर्जी को व्यक्त किया तो दर्जी ने मेरी कल्पना को वास्तविक रूप प्रदान कर दिया।

“Imagination is way to think with Creativity”

काल्पनिक विधि की आवश्यकता

काल्पनिक विधि की आधुनिक जीवन में बहुत अधिक भूमिका है। कल्पना के माध्यम से सोचा गया आधुनिक युग मे विद्यार्थी या अध्यापक को विषमप्रतीत करवाता है। इसकी बहुत आवश्यकता है।

1. काल्पनिक विधि सृजनात्मक चिंतक शक्ति का विकास करने में सहायक है।

2. यह विद्यार्थी के विषय वस्तु को दूसरों से अलग बनाती है।
3. यह विधि विद्यार्थी के स्वरूप को निखारती है।
4. यह विधि विद्यार्थियो की रूचि को वास्तविक रूप प्रदान करती है।
5. यह विधि विद्यार्थियो को कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।
6. यह विधि अध्यापक तथा विद्यार्थी में अच्छे सम्बन्ध स्थापित करती है।
7. यह विधि विद्यार्थियो में उत्साह पैदा करती है।
8. यह विधि खाली समय का उचित प्रयोग करने के लिए प्रेरणा देती है।
9. यह विधि स्वयं अध्ययन की आदत डालने में सहायक है।

सीमाएं

1. इस विधि में कल्पना का स्वरूप हर बार सही नहीं होता।
2. यह विधि कभी कभी कल्पना के माध्यम से विषय वस्तु से भटक जाती है।
3. इस विधि में विद्यार्थी उचित ढंग से नहीं सोच पाते।
4. जब विद्यार्थी अपनी कल्पना पर आधारित विचार अध्यापक समक्ष रखते हैं तो अध्यापक उनका तिरस्कार कर देते हें, जिससे विद्यार्थी में निराशावाद की भावना का जन्म हो जाता है।
5. काल्पनिक सोच को वास्तविक रूप तथा मेहनत के पश्चात् भी काफी बार उचित प्रतिफल नहीं मिलता।
6. काल्पनिक तथा वास्तविकता में अधिक अन्तर होने के कारण जीवन सम्बन्धित समस्याएं बढ़ भी जाती है।
7. कला क्षेत्र के अन्तर्गत काल्पनिक ढंग से अधिकता हो जाती है।
8. यह विधि कुछ सिद्धान्तों के खिलाफ चली जाती है।
9. यह विधि में समय, धन की नष्टता भी बढ़ जाती है।
10. यह सोच कर विकारात्मक रूप में प्रदान करती है।

निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि काल्पनिक विधि व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने के साथ–साथ व्यक्ति के सम्पूर्ण चित्र को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करने का साधन है। यह विधि काफी बार वास्तविकता से बहुत दूर भी हो जाती है परन्तु विषमता का भाव या यूं कहें कि पुरानी चीजों की कल्पना की दृष्टि का प्रयोग करके एक नवीनतम विषय रूप प्रस्तुत करती है।

आधुनिक युग में शिक्षा का विस्तार अवश्य हो रहा है, परन्तु वह उचित गुणों का विकास केवल विधियों का प्रयोग करने से ही सम्भव है। विधियां शिक्षण के ढंग में जान डाल स्थाई

ज्ञान प्रदान करके विद्यार्थी में विषय वस्तु का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करती है। इन शिक्षण विधियों के माध्यम से शिक्षा, अध्यापक तथा विद्यार्थी में सम्बन्ध बनता है।

References

- http://www.scert.cg.gov.in/pdf/dedfirst2013/kalashikshan.pdf
- Birnbaum, A. (2012). Education for Creative Living: Ideas & Prposals of Tsunesaburo Makiguchi, National Book trust, New Delhi.
- https://www.goshen.edu/art/ed/artlsn.html.